उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 152 /एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 09-05-2024

दिनांक	:	09 मई, 2024
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की चतुर्थ बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियॉ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024–25 की चतुर्थ बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 09 मई, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक व गेहूँ विशेषज्ञ; शुआट्स प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; कृषि विश्वविद्यालय, मेरठ के मौसम वैज्ञानिक;तथा आई.आई.एस. आर., लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; रेशम विभाग; राहत आयुक्त के प्रतिनिधि; प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, लखनऊ तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा के मौसम वैज्ञानिक व कीट वैज्ञानिक; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के तिलहन व दलहन वैज्ञानिकों द्वारा ऑनलाइन प्रतिभाग किया गया।

प्रथम सप्ताह (10 मई से 16 मई, 2024) का मौसम पूर्वानुमान

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार प्रथम सप्ताह 10 मई से 16 मई, 2024 के आरम्भिक 4–5 दिनों के दौरान प्रदेश के विभिन्न कृषि जलवायु अंचलों में छुटपुट से हल्की वर्षा जबकि उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं संलग्न भावर तराई क्षेत्र में कहीं कहीं मध्यम वर्षा होने की संभावना है। इस दौरान 25 से 35 किमी प्रति घण्टा की गति से तेज सतही हवाएं चलने की संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य या सामान्य से आशिंक रूप से कम रहने की संभावना है।
- प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 32 से 34 डिग्री सेल्सियस, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग, मध्य पश्चिमी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग एवं उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग एवं विन्ध्य के पूर्वी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस, दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 38–40 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (17 से 23 मई, 2024) का मौसम दृष्टिकोण

- भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम दृष्टिकोण के अनुसार द्वितीय सप्ताह (17 से 23 मई, 2024) के दौरान प्रदेश के उत्तर–पूर्वी मैदानी क्षेत्र तथा भावर तराई क्षेत्रों के तराई इलाकों में कहीं–कहीं छुटपुट वर्षा होने की संभावना है।
- इस सप्ताह के दौरान प्रदेश के उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास रहने की संभावना है।
- प्रदेश के भावर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस, भावर तराई के मध्य भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकम तापमान 36 से 38 डिग्री सेल्सियस, दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अधिकांश भाग, मध्य मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस

से अधिक जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 38 से 40 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले दो सप्ताह हेतु कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- पर्यावरण तथा पोषक तत्वों के संरक्षण हेतु किसान भाई गेहूँ की कटाई के बाद फसल अवशेष को कदापि न जलायें बल्कि इसे खेत में सड़ाकर मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ायें। गेहूँ के अवशेष को सड़ाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर 5 टन/हे0 की दर से गोबर की खाद डालें। गोबर की खाद उपलब्ध न हो तो 20 किग्रा./हे. अतिरिक्त नत्रजन अथवा 2.5 किग्रा./हे. ट्राईकोडरमा बिरडी को मिट्टी या बालू में मिलाकर जुताई से पहले खेत में डालकर मिला दें।
- गर्मी में खेत की गहरी जुताई करें। मृदा परीक्षण करा लें तथा संस्तुति अनुसार ही उर्वरकों का प्रयोग करें।
- धान की रोपाई वाले प्रक्षेत्रों में हरी खाद के लिए सनई अथवा ढैंचा की बुआई यथाशीघ्र करें। सभी जनपदों में कृषि विभाग के गोदामों पर ढैंचा का बीज उपलब्ध है।
- मृदा जनित रोगों यथा तना सड़न, जड़ सड़न, झुलसा, भूरा धब्बा, बकानी, जीवाणु झुलसा, उकठा आदि से बचाव हेतु *ट्राइकोडर्मा विरिडी* 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा *ट्राइकोडर्मा हरजियेनम* 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 किग्रा. प्रति हे. 65-75 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8-10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से शीथ ब्लाईट, मिथ्या कण्डुआ आदि रोगों से बचाव किया जा सकता है।
- दीमक, सफेद गिडार, सूत्रकृमि, जड़ की सूड़ी, कटवर्म आदि कीटों से बचाव हेतु ब्यूबेरिया बैसियाना 1 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2.50 किग्रा./हे. की दर से 65-75 से किग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8 से 10 दिन तक छाया में रखने के उपरान्त आखिरी जुताई के समय खेतों में मिलाकर भूमि शोधन करना चाहिए ।
- उर्द, मूँग व गन्ना की फसलों एवं लीची व आम के बागों में पर्याप्त नमी बनाये रखने के लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।
- 20 मई से लम्बी अवधि की धान की किस्मों की बेरन डालने हेतु बीज की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

धान की खेती

- उपरहार भूमि के लिए धान की किस्मों यथा एन.डी.आर. 97, एन.डी.आर. 118, एम.टी.यू. 1010, शुष्क सम्राट, सहभागी के 30 किग्रा0/हे0 की दर से बेरन हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- सिंचित भूमि के लिए धान की किस्मों एन.डी.आर. 2064, एन.डी.आर. 2065, एन.डी.आर. 359, एन.डी.आर. 3112-1, सरजू 52, एच.यू.आर. 1304 एवं एच.यू.आर. 1304 के 30 किग्रा0/हे0 की दर से बेरन हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- निचली भूमि के लिए धान की किस्मों एन.डी.आर. 9930111, एन.डी.जी.आर. 201, एन.डी.जी.आर. 702, स्वर्णा-सब1 किस्मों के 30 किग्रा0/हे0 की दर से बेरन हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- सुगन्धित धान की किस्मों यथा पूसा नरेन्द्र काला नमक1, पूसा नरेन्द्र सी.आर.डी. काला नमक2, एन.डी.आर. 6093 एवं नरेन्द्र लालमती धान के बीज को 30 किग्रा0/हे0 की दर से बेरन हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- आचानक बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों के लिए धान की किस्मों यथा आई.आर. 64-सब1 (पकने की अवधि 110 दिन) एवं सांभा मसूरी-सब1 (पकने की अवधि 145 दिन) के 30 किग्रा0/हे0 की दर से बेरन हेतु बीज की व्यवस्था करें।
- नर्सरी डालने के लिए शोधित बीज का ही प्रयोग करें। यदि बीज पूर्व शोधित न हो तो धान की नर्सरी डालने से पूर्व बीज शोधन सुनिश्चित करें। यदि जीवाणु झुलसा या जीवाणुधारी रोग की समस्या हो तो 25 किग्रा0 बीज के लिए स्टेप्टोमाइसीन सल्फेट 90 प्रतिशत एवं टेट्रासाइक्लिन हाइड्रोक्लोराइड 10 प्रतिशत की 4 ग्राम मात्रा को 100 ली. पानी में मिलाकर रात भर भिगो दें। दूसरे दिन छाया में सुखाकर नर्सरी डालें।
- बीज गलन, झोंका,शीथ ब्लाइट, भूरा धब्बा तथा मिथ्या कण्डुआ रोग से बचाव हेतु 2.50 ग्रा. थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. अथवा कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. की 2 ग्रा. अथवा थीरम 75 प्रतिशत डब्लू.एस. + कार्बेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू.पी. 2 ग्रा. अथवा यथा संभव ट्राईकोडर्मा, 4 से 5 ग्रा. प्रति किग्रा. बीज की दर से बीजशोधन करें।

मक्का की खेती

- अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए मक्का की देर से पकने वाली संकर किस्मों यथा गंगा–11, सरताज, एच.क्यू. पी.एम.–5, एच.क्यू.पी.एम.–8, प्रो–316 (4640), बायो–9681, वाई–1402, पी.एस.सी.–740, एन.एम.एच.–920, सीडटेक–740, एन.एम.एच.–713 के तथा संकुल किस्म प्रभात आदि के बीज की व्यवस्था कर बुआई करें।
- यदि बीज शोधित न हो तो बीज बोने से पूर्व, पहले 1 किग्रा0 बीज को 2.5 ग्रा. थीरम या 2 ग्राम कार्बोन्डाजिम 50 डब्लू.पी. से शोधित करना चाहिये तथा बाद में बीज को इमिडाक्लोप्रिड 2 ग्रा./किग्रा. से बीज को शोधित करना चाहिए।

जायद फसलों की खेती

- मूंग की फसल में काले सिरवाली सफेद रंग के इल्लियों का आक्रमण देखने को मिल रहा है। इसके शरीर के प्रत्येक खण्ड पर काले रंग के धब्बे देखे जा सकते है। यह इल्लियां छोटे पौधों पर अधिक आक्रमण कर रही है। इनसे फसल सुरक्षा के लिये नीम के तेल का 5 प्रतिशत का घोल बनाकर फसल पर एक सप्ताह के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें या इमामेक्टिन बेजोएट 5 प्रतिशत एस.जी. की 1 ग्राम मात्रा को दो लीटर पानी में मिलाकर 12 से 15 दिनों के अंतराल पर 2 बार शाम के समय छिड़काव करें।
- उर्द/मूँग की फसल में पीला चित्रवर्ण (मोजैक) रोग दिखाई देते ही प्रभावित पौधे सावधानीपूर्वक उखाड़ कर नष्ट (जला दे/गाड़ दें) कर दें। 5 से 10 पौढ़ मक्खी (सफेद मक्खी) प्रति पौध की दर से दिखाई पड़ने पर आक्सीडेमेटॉन–मिथाइल 25 प्रतिशत ई.सी. या डाइमेथोयेट 30 ई.सी. 1 लीटर प्रति हे. की दर से 600–800 ली. पानी मिलाकर छिड़काव करना चाहिये।
- सूरजमुखी के बीज पक कर कड़े हो जाए तो मुन्डकों की कटाई कर लेनी चाहिए। मुन्डकों को काट कर साये में सूखा लें और इन्हे ढेर बनाकर नहीं रखना चाहिए।

गन्ना की खेती

- किसान भाई गन्ने में 12–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई अवश्य करें।
- सिंचाई उपरान्त ओट आने पर नत्रजन की पहली टापड्रेसिंग करके गुड़ाई करें।
- नत्रजन की टापड्रेसिंग हेतु 125 किग्रा यूरिया/हे0 की दर से पर्याप्त नमी की दशा में गन्ने की पंक्तियों के समीप डालें।
- अंकुर बेधक व चोटी बेधक कीट से बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रोनिलीप्रोल 18.7 एस.सी. की 375 मिली. मात्रा को 1000 ली. पानी में घोलकर/हे0 की दर से पौधों की जड़ों को नहला दें।
- चूसक कीटों के प्रकोप होने पर प्रोफेनोफास 40 प्रतिशत + साइपर 04 प्रतिशत को 750 मिली. मात्रा को 625 ली. पानी में घोल बनाकर प्रति हे. कर दर से छिड़काव करें।
- जिन किसान भाइयों ने गन्ने के साथ अन्तः फसल के रूप में दलहनी फसलों यथा मूँग, उर्द एवं लोबिया की बुआई की है। समय–समय पर सिंचाई, खरपतवार प्रबन्धन एवं कीट प्रबन्धन करते रहें।

बागवानी

- आम तथा लीची के बागों में आवश्यकतानुसार नमी बनाये रखें।
- आम में फुदका/भुनगा कीट के बचाव के लिये इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. नामक कीटनाशी की 1 से 2 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।
- आम के आतंरिक सड़न रोग के नियंत्रण हेतु बोरेक्स तत्व की 6 से 8 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पहला पर्णीय छिड़काव करें।
- आम के विभिन्न प्रकार के रोगों एवं कीट से होने वाले कुप्रभाव, फल आकर्षण तथा साफ–सथुरा प्राप्त करने हेतु फ्रूट कवर बैग का प्रयोग जरूर करें। आम के रंगीन प्रजातियों में फ्रूट कवर बैग का प्रयोग न करें क्योंकि कवर करने पर फलों पर रंग विकसित नहीं होगा।
- लीची के फल को फ्रूट क्रैकिंग से बचाने के लिये शाम के समय निश्चित अंतराल पर सिंचाई करते रहें तथा प्लास्टिक मल्च का प्रयोग करें। इसके अतिरिक्त कैल्शियम नाईट्रेट 10 ग्रा. एवं बोरेक्स 800 मि.ग्रा. का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव भी करें।
- आम एवं अमरूद में फलमक्खी से बचाव हेतु मिथाइल यूजिनाल एवं क्यु ल्योर ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. लगाये तथा नीम एक्सट्रैक्ट 5 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

- फलों के बाग के रोपण हेतु मई माह में गड्डों की खुदाई पूर्ण कर लें। आम एवं लीची की बाग स्थापना के लिए 10X10 मीटर की दूरी पर 1 घन मीटर, अमरूद, ऑवला, नींबू वर्गीय, बेल एवं बेर के रोपण हेतु 6X6 मीटर की दूरी पर 75 से 100 घन सेन्टीमीटर एवं केला एवं पपीता की खेती के लिए 1.8X1.8 मीटर की दूरी पर 35 घन सेन्टीमीटर आकार के गड्डे की खुदाई करके खुला छोड़ दें, जिससे धूप से कीट एवं रोग के पैथोजन खत्म हो जाते है। गड्डों की खुदाई करते हुए यह ध्यान रखें की गड्डे के ऊपर की आधे गहराई की मिट्टी एक तरफ एवं शेष की मिट्टी दूसरी तरफ बाहर रखें।

सब्जियों की खेती

- कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी का प्रकोप होने पर एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई.सी. 2.50 ली. मात्रा को 500 से 600 ली. पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- कद्दूवर्गीय फसलों को फल मक्खी से बचाने हेतु क्यू ल्योर फेरोमोन ट्रैप 8 से 10 ट्रैप प्रति हे. की दर से लगायें।
- मिर्च में पर्णकुंचन एवं मोजैक विषाणु रोग का प्रकोप अधिक होता है। इस रोग का प्रसार वाहक कीट सफेद मक्खी या हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके प्रसार की रोकथाम हेतु आवश्यकतानुसार इमिडाक्लोरोपिड 30.5 प्रतिशत एस.सी. 1.0 दवा को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतरातल पर छिड़काव करें तथा रोग ग्रसित पौधों को उखाड़कर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें।
- बैंगन एवं टमाटर की फसल को तना और फलबेधक कीट से बचाव के लिये क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 1.0 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- हल्दी एवं अदरक की बुवाई हेतु खेत की तैयारी एवं कंद की व्यवस्था करें।
- भिण्डी की शाखा एवं फलबेधक कीट के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप 5 प्रति हेक्टेयर फसल में 6 से 12 इंच ऊपर लगायें अथवा फ्लुबेन्डीमाइड 39.35 एस.सी. की 2.0 मिली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव फल तुड़ाई उपरांत सायं काल में करें।

पशुपालन

- बड़े पशुओं में गला घोटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण करायें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- स्वाइन फीवर की वैक्सीन सभी पशुचिकित्सालयों पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- पशुओं को धूप से बचाने के लिए दोपहर में छायादार स्थान पर बॉधें तथा सुबह एवं सायंकाल में ही चराई करायें।
- पशुओं को पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें। दुहान से पहले पशुओं को सुबह शाम ताजे पानी से नहलायें और खरहरा करें जिससे पशुओं में दूध उत्पादन कम न हो।
- पशुओं को हरा चारा अवश्य खिलायें। पशुओं को मुरझाया हुआ हरा चारा (विशेष रूप से ज्वार) ना खिलायें क्योंकि इसमें एच.सी.एन. तत्व (जहरीला तत्व) की अधिकता से पशु बीमार हो सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में तापमान अधिक होने के कारण पशुओं में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती हैं। इससे बचाव हेतु पशुओं को खनिज–लवण मिक्चर खिलायें।

मत्स्य पालन

- तालाबों का जल स्तर 5 से 5.5 फिट तक बनाये रखा जाए।
- मछलियों में वृद्धि हेतु पूरक आहार का प्रयोग मछलियों के वजन के 1 से 2 प्रतिशत तक किया जाए।
- कॉमन कार्प मछलियों के प्रजनन के दृष्टिगत प्रजनकों (ब्रूडर) को पृथककरण उपरान्त उनका विशेष पोषण सुनिश्चित किया जाए।
- वर्तमान में कॉमन कार्प मछलियों का बीज उत्तर प्रदेश मत्स्य विकास निगम या निजी क्षेत्र में स्थापित हैचारियों पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
- मछलियों को निश्चित समय पर ही भोजन दिया जाए।

वानिकी

- वर्तमान मौसम में आग से बचाव करें।
- कंजी, सेमल, गुलमोहर इत्यादि के बीज प्राप्त करने हेतु निकटतम क्षेत्रीय वनाधिकारी से सम्पर्क करें। पौधशाला में पौधों की सिंचाई आवश्यकतानुसार करें।

- पौधों के रोपण हेतु गड्ढों की खुदाई का कार्य प्रारम्भ करें।
- नर्सरी में संरक्षित वानिकी पौध को तेज धूप से बचाव हेतु छाया में रखें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 22 मई, 2024 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

(संजय सिंह) 21/05/24
महानिदेशक

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।

32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
47. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

9-5-24

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024–25 की तृतीय बैठक दिनांक 09 मई, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
3. डा. अनिरूद्ध दूबे, पूर्व एग्रोमेट्रोलाजिस्ट, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
4. डा. विनोद कुमार तिवारी, वैज्ञानिक अधिकारी, एव सदस्य सचिव, उपकार, लखनऊ।
5. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस)
6. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
7. श्री ए.के. बिश्नोई, संयुक्त कृषि निदेशक, धान्य फसलें, कृषि विभाग, उ.प्र.।
8. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ (ऑनलाइन)।
9. डा. राजीव कुमार वर्मा, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
10. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उत्तर प्रदेश।
11. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
12. डा. सोमवीर सिंह, कीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, च.शे.आ. कृषि एवं प्रौ. वि0वि0, कानपुर।
13. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
14. श्री ओमकार सिंह त्यागी, प्रबंधक कृषि, सी.एस.सी.ई गवर्नेस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड, विजय खण्ड गोमती नगर लखनऊ।
15. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आवजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल ऑफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना, नैनी एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट, शुआट्स, प्रयागराज।
17. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
18. श्री कुंदन सिंह, पादप रक्षा विभाग, कृषि विभाग, लखनऊ।
19. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
20. श्री बाल कृष्ण, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
21. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।